

## पाठ्यपुस्तक का रचनात्मक ढंग से उपयोग करना



भारत में विद्यालय आधारित  
समर्थन के माध्यम से शिक्षक  
शिक्षा  
[www.TESS-India.edu.in](http://www.TESS-India.edu.in)



<http://creativecommons.org/licenses/>



## संदेश



शिक्षकों को बाल केंद्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है। ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ० मुरली मनोहर सिंह)

निदेशक

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार



| समीक्षा एवं दिशाबोध                                                                                    |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                              |
| डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार |
| डॉ. कासिम खुशीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्                                   |
| डॉ. इम्तियाज आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                           |
| डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                                         |
| डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                                               |
| डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                                             |
| श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार                                   |

| स्थानीयकरण                                                                                     |
|------------------------------------------------------------------------------------------------|
| भाषा और शिक्षा                                                                                 |
| डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली |
| श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान                                           |
| श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना                                 |
| श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा                                                |
| प्राथमिक अंग्रेजी                                                                              |
| श्री अरशद रजा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा                             |
| श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग                                   |
| श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा               |
| श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना                                        |
| माध्यमिक अंग्रेजी                                                                              |
| श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर           |
| डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना             |
| प्राथमिक गणित                                                                                  |
| श्री कृष्ण कान्त ठाकुर                                                                         |
| श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा                          |
| श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण                                 |
| माध्यमिक गणित                                                                                  |
| डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट                                                                  |
| श्री रिजवान रिजवी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर                                 |
| श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली                       |
| प्राथमिक विज्ञान                                                                               |
| श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर                                            |
| श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर                                              |
| श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा    |
| माध्यमिक विज्ञान                                                                               |
| श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद                                                                        |
| श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली    |

**TESS-India (Teacher Education Through School Based Support)** का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र-केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

**TESS-India** के मुक्त शैक्षिक संसाधन (**Open Education Resources – OERs**) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्रों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

**TESS-India** के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये हैं और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं (<http://www.tess-india.edu.in>)। मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ **TESS India** कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

**TESS-India** मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

### वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: । इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए **TESS-India** वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।

**TESS-India** वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

**TESS-India** वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या **TESS-India** की वेबसाइट, <http://www.tess-india.edu.in/> से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0      EE10 v2  
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>

**TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government**

## यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए जारी अतिरिक्त प्रयास को विकसित करने के शुरुआती साधन के रूप में पाठ्यपुस्तक के उपयोग के बारे में है। पाठ्यपुस्तक आपके पाठों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इस इकाई में आपको यह बताया गया है कि आप किस तरह पाठ्यपुस्तक का उपयोग अलग अलग तरीकों से कर सकते हैं और इसमें दिए गए सुझावों के आधार पर अपने पाठों को ज्यादा रोचक बना सकते हैं और छात्र-छात्राओं के अधिगम में सुधार कर सकते हैं।

अंग्रेजी सीखने के लिए आपके छात्र-छात्राओं को बोलने और सुनने का बहुत अभ्यास करना चाहिए — केवल भाषा के पाठ का नहीं। सुनने और बोलने की अक्सर होने वाली संक्षिप्त गतिविधियाँ आपके अंग्रेजी भाषा के पाठों की अनुपूरक बन सकती हैं और कक्षा में अंग्रेजी का उपयोग करने में आपके आत्मविश्वास को भी बढ़ा सकती हैं।

जब आप पाठ्यपुस्तक के पाठों को अपने छात्र-छात्राओं के लिए अपनाते और बढ़ाते हैं, तो आप उन्हें कई अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप अंग्रेजी के प्रति अपना आत्मविश्वास और अध्यापन कौशल भी सुधार सकते हैं। इस इकाई की केस स्टडी और गतिविधियाँ इस तरह तैयार की गई हैं, ताकि आपको अपनी कक्षा के लिए इन अवसरों की योजना बनाने में मदद मिले।

## आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- मौखिक कार्य के लिए लचीले ढंग से अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने के लिए।
- नए अंग्रेजी शब्दों का परिचय कराने के लिए।
- अंग्रेजी के पाठों का संबंध अपने छात्र-छात्राओं के जीवन से जोड़ने के लिए।

## 1 पाठ्यपुस्तक का उपयोग करना

नियमित रूप से की जाने वाली संक्षिप्त गतिविधियों से आपको और आपके छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी का अभ्यास करने और अपना आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिल सकती है, जैसा कि पहली केस स्टडी में दर्शाया गया है।

### केस स्टडी 1: सुश्री शीला भाषा की दिनचर्या विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक के पाठों का उपयोग करती हैं

*सुश्री शीला ने कक्षा तीन में बोलने, सुनने के कौशल का विकास और शब्दावली को बढ़ाने के लिए अपनी अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक का उपयोग किया।*

पाठ्यपुस्तक में 'The Phone Call' नामक पाठ है जिसमें 'please', 'thank you' और 'sorry' बोलना सिखाया गया है। ये शब्द महत्वपूर्ण हैं। मैंने हर दिन बातचीत के दौरान कक्षा में इन शब्दों का नियमित रूप से उपयोग शुरू किया। मैंने छात्र-छात्राओं को इनका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया, और मैंने खुद इन शब्दों का उपयोग करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया — भले ही मेरा उच्चारण पूरी तरह सटीक नहीं है।

साथ ही मैंने सप्ताह के दिनों के बारे में एक कविता सिखायी। मैंने कक्षा के लिए एक कैलेंडर खरीदकर उसे दीवार पर लगा दिया। मैंने एक कविता सिखाई और मैंने वर्ष के महीनों के नाम भी सिखाए, जो कि पाठ में नहीं हैं। इसके बाद मैंने रोज़ की एक दिनचर्या शुरू की, जिसमें हर सुबह एक छात्र/छात्रा उठकर कक्षा की शुरुआत में दिन, तारीख और महीने की घोषणा करता/करती है: 'Good morning, class. Today is Monday, October the thirteenth, two thousand and fourteen.'

अब जबकि हमारे पास कुछ अंग्रेजी दिनचर्या बन गई हैं, तो मेरे पास छात्र-छात्राओं की अंग्रेजी का आकलन करने और

अपने खुद की अंग्रेजी भी सुधारने के लिए ज्यादा अवसर हैं।



## ज़रा सोचिए

- आपके अनुसार सुश्री शीला जब इस तरह पाठ्यपुस्तक के पाठों का विस्तार करती हैं, तो उन्हें कितनी अतिरिक्त योजना बनानी पड़ेगी?
- क्या सुश्री शीला की दिनचर्या कक्षा के सभी छात्र-छात्राओं के लिए प्रभावी होगी, चाहे उनकी क्षमता का स्तर जो भी हो? क्यों या क्यों नहीं?
- आपके पास अंग्रेजी की ऐसी कौन-सी दिनचर्या हैं, जो भाषा की पाठ्यपुस्तक के पाठ से बाहर की हैं?
- आपके पास छात्र-छात्राओं द्वारा बोली जाने वाली अंग्रेजी के आकलन के लिए ऐसे कौन-से अवसर हैं, जो भाषा की पाठ्यपुस्तक के पाठ से बाहर के हैं?

यदि आप अपने छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी का अभ्यास करने के लिए लगातार बहुत सारे अवसर देते हैं, न केवल भाषा के पाठ में, बल्कि उनके विद्यालय दिवस के अन्य समय पर भी, तो आपके पास उन्हें सुनने, अवलोकन करने और आकलन करने के ज्यादा अवसर होंगे। यदि छात्र-छात्रा केवल पाठ्यपुस्तक के पाठ से ही अंग्रेजी सुनते या लिखते हैं, तो उनकी प्रगति धीमी रहेगी और आपके पास उनका मूल्यांकन करने के अवसर कम रहेंगे। अगली गतिविधि में आप छात्र-छात्राओं के लिए अपनी भाषा की पाठ्यपुस्तक की संभावना का विस्तार करेंगे। आपके लिए यह आपकी स्वयं की अंग्रेजी का अभ्यास करने और इसे सुधारने का एक मौका भी है।



भाषा की दिनचर्या विकसित करने के लिए SCERT, बिहार द्वारा विकसित Blossom part-3 की पाठ संख्या 4 (पेज 23), पाठ संख्या 7 (पेज 41), पाठ संख्या 15 (पेज 75), पाठ संख्या 16 (पेज 81-82) तथा Blossom part 4 की पाठ संख्या 1 (पेज 5) एवं पाठ संख्या 4 से अभ्यास करें/कराएं।



चित्र 1: अंग्रेजी सीखने वाले छात्र-छात्राओं को सुनना, अवलोकन करना और उनका आकलन करना।

## गतिविधि 1: पाठ्यपुस्तक का उपयोग करना – एक नियोजन गतिविधि

आप अपनी अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक में जिस अगले पाठ या इकाई को सिखाने की योजना बना रहे हैं, उसे देखें। अपनी कॉपी में इन प्रश्नों के उत्तर लिखें:

- यह पाठ या इकाई किस बारे में है? इस विषय का आपके छात्र-छात्राओं के अनुभव से कितना संबंध है?
- उन मुख्य शब्दों और वाक्यों की एक सूची बनाएँ, जिन्हें छात्र-छात्रा इस पाठ से सीख सकते हैं।
- इस सूची के कौन-से शब्द आपके छात्र-छात्राओं को पहले से मालूम हैं?
- विद्यालयी दिन के दौरान आप किस-किस समय इन मुख्य शब्दों या वाक्यों का उपयोग कर सकते हैं?
- इन मुख्य शब्दों के उपयोग को बढ़ाने में आपको किन अतिरिक्त संसाधनों या गतिविधियों से मदद मिल सकती है?

अब अपनी सूची से एक या दो मुख्य शब्द या वाक्य चुनें। कक्षा में अपनी नियमित दिनचर्या में इन शब्दों या वाक्यों का उपयोग करें।

आपको कम से कम दो सप्ताहों तक इसका पालन और अभ्यास करना चाहिए। आपको यह कैसा लगता है? सरल या कठिन? छात्र-छात्राओं की प्रतिक्रिया कैसी है? क्या अंग्रेजी के उनके उपयोग में सुधार हुआ है? आप किस तरह बता सकते हैं?

अपने सभी छात्र-छात्राओं को भाग लेने और सीखने के लिए प्रेरित करने हेतु संसाधन 1, 'सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न पूछना' देखें।

## 2 चित्र और शब्द

केस स्टडी 1 में, सुश्री शीला ने अपनी पाठ्यपुस्तक का अधिकाधिक लाभ उठाने के तरीके ढूँढ़े, इसके लिए उन्होंने ऐसे कुछ शब्द या वाक्य चुने, जिनका उपयोग वे और उनके छात्र-छात्रा भाषा का पाठ पूरा होने के बाद भी जारी रख सकते थे। अगली केस स्टडी में, एक शिक्षक छात्र-छात्राओं की अंग्रेजी बोलने और शब्दावली को विकसित करने के लिए चित्रों का उपयोग करके पाठ्यपुस्तक के एक विषय-वस्तु में सुधार करते हैं।

### केस स्टडी 2: श्री अमन भाषा को विकसित करने के लिए चित्रों का उपयोग करते हैं

श्री अमन ने कक्षा चार के छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी सिखाने के लिए उनके परिवार के बारे में मौजूदा ज्ञान का उपयोग किया।

पाठ्यपुस्तक में एक इकाई एक बच्ची और उसके परिवार के बारे में है। मैंने छात्र-छात्राओं को पाठ्यपुस्तक में 'family' शब्द और चित्र दिखाए। हमने वे शब्द ऊँची आवाज़ में बोले और मैंने उन्हें बोर्ड पर लिखा।

इसके बाद मैंने उनसे उनके पिता, माता, दादा, दादी अदि के चित्र बनाने और उन चित्रों पर अंग्रेजी में नाम लिखने को कहा। वे मुझसे प्रश्न पूछने लगे, जैसे:

- 'क्या अंग्रेजी में दादी और नानी के लिए अलग अलग नाम नहीं हैं?'
- 'क्या बड़ी बहन और छोटी बहन के लिए एक ही शब्द का उपयोग किया जाता है?'

मैंने उन्हें 'elder sister' और 'younger sister', तथा 'mother's mother' और 'father's mother', बोलना सिखाया,

हालांकि ये अभिव्यक्तियाँ पाठ्यपुस्तक में नहीं हैं। इसके बाद मैंने छात्र-छात्राओं के चित्रों का उदाहरणों के रूप में उपयोग करके उन्हें बताया कि मौखिक रूप से वाक्य कैसे बनाए जाते हैं:

This is my mother. This is my elder sister.

This is Rajiv's father.

This is Amrita's grandmother, her mother's mother.

हमने साथ मिलकर ऊँची आवाज़ में इन वाक्यों को बोलने का अभ्यास किया। यह मेरी अपनी अंग्रेज़ी के लिए भी अच्छा अभ्यास करने जैसा था।

उसी सप्ताह बाद में, मैंने पाठ का विस्तार किया। पहले मैंने छात्र-छात्राओं से पाठ्यपुस्तक में 'पुल्लिंग' (he) और 'स्त्रीलिंग' (she) शब्दों पर गोल निशान लगाने को कहा। इसके बाद मैंने उनके चित्रों का उपयोग करके ऊँची आवाज़ में उन्हें बताया कि नई शब्दावली का उपयोग करके किस प्रकार उनके पहले वाक्य जोड़े जाएँ:

This is my mother. She is pretty.

This is my elder sister. She is tall.

This is my brother. He is crying.

This is Amrita's grandmother. She is nice.

This is Sushant's father. He is a farmer.

मैंने छात्र-छात्राओं की जोड़ियाँ बनाई और उन्हें एक-दूसरे के साथ वाक्यों का अभ्यास करने को कहा, जिसके लिए मैंने उनके शब्दों का प्रदर्शन करने के लिए उनके चित्र दिखाए। जब वे ऐसा कर रहे थे, तो मैं उनके आत्मविश्वास और कौशल का अवलोकन कर सकता था और टिप्पणियाँ लिख सकता था।

मेरे कुछ छात्र-छात्रा स्थानीय अनाथालय से आते हैं और उनका कोई परिवार नहीं है। मैंने उनसे उनके दोस्तों या गाँव में वे जिन दूसरे लोगों को जानते हैं, उनके चित्र बनाने को कहा। मैंने यह काम बहुत ध्यान से किया, ताकि वे खुद को दूसरों से अलग न महसूस करें, और अनावश्यक रूप से खुद के प्रति शर्मिंदगी महसूस न करें। आत्मविश्वास की कमी वाले छात्र-छात्राओं को शामिल करने के लिए, मैंने उनके चित्रों की ओर इशारा करके 'Is this your father? Is this your sister? Is this your friend? Is this the farmer?' पूछा और उन्होंने उत्तर में 'yes' या 'no' कहा, या सिर्फ अपना सिर हिलाया, जिससे मैं उनकी समझ का आकलन कर सकता था।



## ज़रा सोचिए

- श्री अमन के वर्णन को देखकर, आपके अनुसार उनकी गतिविधियों के लिए कितने पाठ लगे होंगे?
- उनकी पाठ योजना टिप्पणी के रूप में लिखने की कोशिश करें।



इस केस स्टडी की बातों का अभ्यास करने के लिए SCERT, बिहार द्वारा विकसित Blossom part -2 की पाठ संख्या 01 (पेज 1-2) के चित्रों और प्रश्नों को देखें।





## वीडियो: जोड़े में कार्य का उपयोग करना

### गतिविधि 2: चित्रों का उपयोग करना

एक उदाहरण के रूप में केस स्टडी 2 का उपयोग करके एक सीखने की योजना बनाएँ और छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी का अभ्यास करने के लिए चित्रों का उपयोग करना सिखायें।



चित्र 2: अंग्रेजी का अभ्यास करने के लिए चित्रों का उपयोग करना।

पाठ्यपुस्तक का एक पाठ लें। यह पाठ परिवार, जानवरों, भोजन, यात्रा या पर्यावरण के बारे में हो सकता है। यह कोई पहले सिखाया जा चुका पाठ या कोई नया पाठ हो सकता है। आप इसे कई पाठों के दौरान सिखा सकते हैं।

- छात्र-छात्राओं को चित्र दिखाकर और साथ ही शब्दावली का अभ्यास करते हुए विषय समझाएँ।
- छात्र-छात्राओं को खुद चित्र बनाने और उन चित्रों पर अंग्रेजी में लेबल लिखने को कहें।
- उन्हें उनके चित्रों के आधार पर अंग्रेजी में सरल वाक्यों का उपयोग करना सिखाएँ।

आप छात्र-छात्राओं का आकलन कैसे करेंगे? जब वे काम करते हैं, क्या तब आप उन्हें सुनेंगे? या आप उनसे कहेंगे कि वे अपने कार्य के बारे में आपको समझाएँ या पूरी कक्षा को बताएँ?

जिन छात्र-छात्राओं को अतिरिक्त सहायता की ज़रूरत है, उनके लिए आप क्या करेंगे? कुछ छात्र-छात्राओं को काम पूरे करने के लिए अतिरिक्त समय की या बोलने में संकोच को दूर करने के लिए मदद की ज़रूरत हो सकती है। आपकी योजना इन ज़रूरतों को शामिल करने के लिए लचीली होनी चाहिए। यदि आपकी कक्षा अधिक छात्र-छात्राओं वाली या अनेक-ग्रेड वाली कक्षा है, तो सक्षम या बड़े छात्र-छात्राओं को छोटे छात्र-छात्राओं की मदद करने को कहें। समूहों को व्यवस्थित करें, ताकि आप उन छात्र-छात्राओं पर ध्यान दे सकें, जिन्हें आपकी मदद की ज़रूरत है।



## वीडियो: समूहकार्य का उपयोग करना



भाषा विकास के लिए चित्रों का उपयोग करने के लिए SCERT, बिहार द्वारा विकसित Blossom part 1 की पाठ संख्या 01 से 10 तक तथा Blossom part -2 की पाठ संख्या 01 से 07 तक के चित्र एवं Exercises का उपयोग करें।

केस स्टडी 2 में, श्री अमन ने पाठ्यपुस्तक के उपयोग के तौर-तरीके में सुधार किया। अगली केस स्टडी में, शिक्षिका ने अपने छात्र-छात्राओं के साथ अंग्रेजी के नए शब्दों के उपयोग के तरीके में भी सुधार किया है।

### केस स्टडी 3: सुश्री तृष्णा और उनके छात्र-छात्रा नए शब्दों का उपयोग करते हैं

आपके छात्र-छात्रा किन अंग्रेजी शब्दों को पहले से जानते हैं और आप उन्हें कौन-से अंग्रेजी शब्द सिखाना चाहते हैं? नालन्दा में कक्षा तीन की शिक्षिका सुश्री तृष्णा ने इसका पता लगाया।

मैं 'Road' के बारे में पाठ्यपुस्तक का एक पाठ पढ़ा रही थी। इस विषय की शब्दावली को बोर्ड पर लिखने से पहले, मैंने छात्र-छात्राओं से उन अंग्रेजी शब्दों के बारे में पूछा, जो उन्हें पहले से मालूम थे। वे मुझे 'traffic', 'traffic police', 'policeman', 'cars', 'bicycle', 'traffic jam', 'rush' और 'zebra crossing' जैसे शब्द बता रहे थे।

फिर एक छात्र ने कहा 'शोर' और मुझसे पूछा कि मैडम अंग्रेजी में "शोर" क्या होता है? मैंने कक्षा की शब्दावली में एक नया अंग्रेजी शब्द जोड़ा: 'noise'। मैंने अंग्रेजी में इस नए शब्द को मज़बूत बनाने के लिए विद्यालय में अलग अलग समय पर और अलग अलग तरीके से इसका उपयोग करने की कोशिश की, उदाहरण के लिए, मैं कहती थी:

- 'Can you hear the noise from the street?'
- 'What a lot of noise!'
- 'You are very noisy!'

और मैंने इसके विपरीतार्थक शब्द का उपयोग करने की भी कोशिश की, उदाहरण के लिए:

- 'When you are quiet, you can go outside.'



### ज़रा सोचिए

- सुश्री तृष्णा ने पाठ की शुरुआत उन अंग्रेजी शब्दों के साथ की, जो उनके छात्र-छात्राओं को पहले से

ही मालूम थे। आपके अनुसार उन्होंने इस तरह शुरुआत क्यों की?

- उन्होंने एक छात्र के प्रश्न सुनने का समय दिया। क्या आपको लगता है कि यह उनके समय का अच्छा उपयोग था?
- उन्होंने कक्षा में हर दिन की बातचीत के दौरान नए अंग्रेजी शब्द 'noise' का उपयोग करने की कोशिश की, और उन्होंने विलोम शब्द 'quiet' के उपयोग की कोशिश भी की। क्या आप अंग्रेजी में ऐसे दो विलोम शब्दों के बारे में सोच सकते हैं, जिनका उपयोग आप प्रतिदिन 'शिक्षक की बात' में कर सकते हों?

### 3 पाठ्यपुस्तक के एक पाठ को आत्मसात् करना

भाषा सीखना तब ज्यादा प्रभावी और यादगार होता है, जब छात्र-छात्रा सीखी गई भाषा का उपयोग वास्तविक-जीवन की परिस्थितियों में कर सकें। अगली केस स्टडी में, शिक्षिका अंग्रेजी का अनुभव लेने और अभ्यास करने में छात्र-छात्राओं की मदद करने के लिए कक्षा के बाहर गईं।

#### केस स्टडी 4: श्रीमती सुलेखा पाठ्यपुस्तक के पाठ को जीवन में उतारती हैं

*श्रीमती सुलेखा जमुई के एक वंचित इलाके में मध्य विद्यालय में कक्षा छः को अंग्रेजी पढ़ाती हैं।*

अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में परिवहन के बारे में पाठ था। इसकी शुरुआत करते हुए मैंने छात्र-छात्राओं से उन वाहनों की सूची बनाने को कहा, जिनके नाम उन्हें अंग्रेजी में मालूम थे। यह काम करने में उन्हें कोई समस्या नहीं हुई। बोर्ड अलग अलग तरह के वाहनों के नामों से भर गया था, जिसमें कारों और मोटरसाइकिलों के ब्रांड नाम भी शामिल थे।

जल्दी ही मुझे पता चला कि बहुत से छात्र-छात्रा ऐसे हैं, जिन्होंने कभी रेलगाड़ी में यात्रा नहीं की थी।

मैंने प्रधानाध्यापिका को प्रस्ताव दिया कि विद्यालय को छात्र-छात्राओं को एक बार रेलगाड़ी की सवारी करवानी चाहिए। प्रधानाध्यापिका ने प्रखंड शिक्षा अधिकारी से इस यात्रा के लिए अनुमति और टिकट के लिए मुख्यमंत्री परिभ्रमण योजना से राशि प्राप्त की।

यात्रा से पहले वाले सप्ताह में, मैंने भाषा गतिविधियों की एक शृंखला के द्वारा छात्र-छात्राओं को तैयार किया:

- हिन्दी में और अंग्रेजी में द्विभाषी पर्चे पढ़कर, रेलगाड़ी में यात्रा करते समय 'dos and don'ts' की लिस्ट बनाकर
- उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी में काउंटर पर टिकट माँगना सिखाकर
- उनसे अंग्रेजी में इस बात का अभ्यास करवाकर कि वे अपने सहयात्रियों से क्या कहेंगे, जैसे 'Good afternoon' और 'This is my class'।

एक अन्य शिक्षक के साथ मैं 32 अत्यंत रोमांचित छात्र-छात्राओं को रेलगाड़ी की उनकी पहली यात्रा के लिए ले गई। आमतौर पर बहुत उधम करने वाले छात्र-छात्रा उस दिन सर्वश्रेष्ठ व्यवहार कर रहे थे। मैंने उन्हें अंग्रेजी पाठों में जो सिखाया था, उन्होंने उसका उपयोग करने की बहुत कोशिश की:

- टिकट काउंटर पर टिकट माँगने, और कीमत पूछने की

- ड्यूटी पर मौजूद टिकट विक्रेता और गार्ड को 'thank you' कहने की
- प्लैटफॉर्म पर लगे बोर्ड पढ़ने की
- स्टेशन पर हिन्दी और अंग्रेजी में होने वाली उद्घोषणाओं को सुनने की
- अन्य यात्रियों से बात करते समय 'Hello' और 'How are you' कहने की

यात्रा एक घंटे से भी कम समय की थी, लेकिन यह एक यादगार अनुभव था।

मुझे लगा कि इस यात्रा की तैयारियों में जितनी मेहनत हमने की थी वह सफल रही और छात्र-छात्राओं ने मेरी उम्मीद से भी ज्यादा अंग्रेजी सीख ली। परिवहन के बारे में पाठ्यपुस्तक का पाठ अधिक प्रासंगिक बन गया।

इस यात्रा ने मेरा अंग्रेजी पढ़ाने का तरीका भी बदल दिया। अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक से कोई भी पाठ पढ़ाने से पहले, मैं अब छात्र-छात्राओं को उस विषय की तैयारी करने के लिए कोई व्यक्तिगत अनुभव देती हूँ, जिसके द्वारा वे अंग्रेजी पढ़ने, बोलने और सुनने का अभ्यास कर सकें।



### ज़रा सोचिए

- इस यात्रा में, छात्र-छात्राओं ने अलग अलग उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी सीखी। क्या आप उनमें से कुछ उद्देश्यों के नाम बता सकते हैं?
- यदि आप अपनी कक्षा को रेलवे स्टेशन पर नहीं ले जा सकते, तो आप अपनी कक्षा में ही इसी तरह की भाषा गतिविधियाँ किस प्रकार तैयार कर सकते हैं?

विशिष्ट उद्देश्यों के लिए भाषा का अभ्यास करने के लिए रोल प्ले और नाटक प्रभावी तरीके हैं। रेलगाड़ी के उदाहरण में, छात्र-छात्रा टिकट विक्रेताओं, कंडक्टरों, यात्रियों और दुकानदारों की भूमिकाएँ निभा सकते हैं। रेलगाड़ी के पोस्टर, उद्घोषणाएँ, पर्चे और टिकट अंग्रेजी में बनाए जा सकते हैं। एक दिन के लिए कक्षा को रेलवे स्टेशन बनाया जा सकता है और छात्र-छात्रा पाठों के बीच काल्पनिक यात्राएँ कर सकते हैं और इन यात्राओं के दौरान अंग्रेजी का अभ्यास कर सकते हैं!



### वीडियो: सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न पूछना

#### गतिविधि 3: पाठ्यपुस्तक के एक पाठ को जीवन में उतारना – एक योजना निर्माण गतिविधि

आप अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक इकाई में आपके छात्र-छात्राओं के लिए वास्तविक-जीवन के संबंध ढूँढ सकते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा दो में भाषा की पाठ्यपुस्तक की एक इकाई 'Village Market' के बारे में है। यह विषय तुरंत ही



बहुत सारे प्रश्नों और संभावित गतिविधियों का संकेत देता है:

- आप में से कौन किसी दुकान में गया है? वहाँ आपने क्या देखा?
- किसी किताबों की दुकान में या लाइब्रेरी में हमें कौन-से अंग्रेजी शब्द सुनने को मिलते हैं?
- हम अंग्रेजी के कौन-से संकेत या लेबल पढ़ सकते हैं?
- हम इन स्थानों में लोगों से किस प्रकार विनम्रता से बात करेंगे?
- हम क्या प्रश्न पूछेंगे?
- हमें क्या जानकारी प्राप्त होगी?
- क्या हम अपनी कक्षा में किताबों की एक दुकान बना सकते हैं?
- क्या हम किसी स्थानीय दुकानदार को अपनी कक्षा से बात करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं?

अब अपनी भाषा की पाठ्यपुस्तक के अगले पाठ पर जाएँ।

एक सहकर्मी के साथ मिलकर (यदि संभव हो तो), प्रश्नों और संभावित गतिविधियों के बारे में सोचें — भले ही आप वे गतिविधियाँ तुरंत न कर सकते हों।

अपने विचारों की सूची बनाएँ। क्या आप साथ मिलकर इनमें से किसी विचार को आजमा सकते हैं? इसे सफल बनाने के लिए आपको क्या चाहिए?

## 4 सारांश

आपकी पाठ्यपुस्तक भाषा गतिविधियों के लिए एक 'मैजिक बॉक्स' बन सकती है। पाठ्यपुस्तक एक उपयोगी मार्गदर्शिका और विचारों का स्रोत है, लेकिन एक शिक्षक के नाते, आपको इसे आगे बढ़ाना होगा। पाठ्यपुस्तक का उपयोग एक संसाधन के रूप में और भाषा सीखने के साधन के रूप में करें, न इसे अपने आप में ही अंतिम लक्ष्य मानें। इस तरह आप अपने छात्र-छात्राओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यपुस्तक को अनुकूलित कर सकते हैं। बेशक, आप अपनी पसंद की किसी भी कहानी या कविता पर, छात्र-छात्राओं द्वारा चुनी गई किसी कहानी या कविता पर, अथवा किसी स्थानीय जगह या स्थानीय ईवेंट पर आधारित कई तरह की गतिविधियाँ भी बना सकते हैं।

केवल कभी-कभार अंग्रेजी बोलने के बजाय बार-बार रिहर्सल और अभ्यास करने से आपको और आपके छात्र-छात्राओं को अपनी आवाज़ों को सुनने की आदत हो जाएगी। अंग्रेजी की रिहर्सल और अभ्यास करना आपको थोड़ा बचकाना लग सकता है, लेकिन ऐसा सोचने से रिहर्सल न करने का एक विषम चक्र तैयार हो सकता है क्योंकि आप इसे बचकाना समझकर छोड़ देते हैं और कभी सुधार नहीं कर पाते। हम उम्मीद करते हैं कि इस इकाई में सुझाई गई कुछ रचनात्मक गतिविधियों से आपको इस चक्र को तोड़ने में मदद मिलेगी।

प्रारंभिक अंग्रेजी हेतु इस विषय पर अन्य शिक्षक विकास इकाईयाँ हैं:

- कक्षा की दिनचर्याएँ
- गीत, कविताएँ और शब्द खेल

- रचनात्मक कलाओं में अंग्रेजी सीखना
- अंग्रेजी और विषय सामग्री एकीकरण
- अंग्रेजी के लिए सामुदायिक संसाधन।

## संसाधन

### संसाधन 1: सोच को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न पूछना

शिक्षक हमेशा अपने छात्र-छात्राओं से सवाल पूछते रहते हैं; सवालों का अर्थ ये होता है कि शिक्षक सीखने और सीखते रहने में अपने छात्र-छात्राओं की मदद कर सकते हैं। एक अध्ययन के अनुसार औसतन, एक शिक्षक अपने समय का एक-तिहाई हिस्सा छात्र-छात्राओं से सवाल पूछने में खर्च करता है (हेस्टिंग्स, 2003)। पूछे गए प्रश्नों में से, 60 प्रतिशत में तथ्यों को दोहराया गया था और 20 प्रतिशत प्रक्रियात्मक थे (हैती, 2012), जिनमें से ज्यादातर के उत्तर सही या गलत में थे। लेकिन क्या सिर्फ सही या गलत में उत्तर वाले सवाल पूछने से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है?

छात्र-छात्राओं से कई अलग अलग तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं। शिक्षक किस तरह के उत्तर और परिणाम पाना चाहते हैं, उनसे पता चलता है कि शिक्षक को किस तरह के सवाल पूछने चाहिए। शिक्षक आमतौर पर छात्र-छात्राओं से सवाल पूछते हैं, ताकि वे:

- जब कोई नया विषय या सामग्री प्रस्तुत की जाती है, तो वे छात्र-छात्राओं को इसे समझने के लिए मार्गदर्शन कर सकें
- बेहतर ढंग से सोचने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित कर सकें
- कोई त्रुटि दूर कर सकें
- छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित कर सकें
- समझ की जाँच कर सकें।

प्रश्नों का उपयोग आमतौर पर यह देखने के लिए किया जाता है कि छात्र-छात्रा क्या जानते हैं, इसलिए यह उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रश्नों का उपयोग प्रेरणा देने, छात्र-छात्राओं के सोचने के कौशल को बढ़ाने और जिज्ञासु मन विकसित करने में भी किया जा सकता है। उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

- **निचले स्तर के प्रश्न**, जिनसे कि तथ्यों का स्मरण और पहले सिखाया गया ज्ञान शामिल होता है, प्रायः बंद सिरों के प्रश्नों (हां या नहीं में उत्तर) से संबद्ध होते हैं।
- **उच्च स्तर के प्रश्न**, जिनके लिए ज्यादा सोचने की ज़रूरत होती है। उनके लिए छात्र-छात्राओं को पहले किसी उत्तर से सीखी गई जानकारी को एक साथ रखने या तार्किक रूप से किसी दलील का समर्थन करने की ज़रूरत पड़ सकती है। उच्च स्तर के प्रश्न प्रायः ज्यादा खुले सिरों वाले होते हैं।

खुले सवाल छात्र-छात्राओं को पाठ्यपुस्तक पर आधारित, यथाशब्द जवाबों से परे सोचने को प्रोत्साहित करते हैं, इसलिए उत्तरों की श्रेणी खींच निकालते हैं। इनसे शिक्षकों को भी विषय-वस्तु के बारे में छात्र-छात्रा की समझ का आकलन करने में मदद मिलती है।

### छात्र-छात्राओं को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना

कई शिक्षक एक सेकंड से भी कम समय में अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हैं और इसलिए अक्सर वे खुद ही प्रश्न का उत्तर दे देते हैं या प्रश्न को दूसरी तरह से दोहराते हैं (हेस्टिंग्स, 2003)। छात्र-छात्राओं को केवल प्रतिक्रिया देने का समय मिलता है — उनके पास सोचने का समय ही नहीं होता! अगर आप उत्तर चाहने से पहले कुछ सेकंड इंतजार करते हैं तो छात्र-छात्राओं को सोचने के लिए समय मिल जाएगा। इसका छात्र-छात्राओं की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रश्न को प्रस्तुत करने के बाद इंतजार करने से निम्नांकित में वृद्धि होती है:

- छात्र-छात्राओं के उत्तरों की लंबाई
- उत्तर देने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या
- छात्र-छात्राओं के प्रश्नों की बारंबारता
- कम सक्षम छात्र-छात्राओं के पास से उत्तरों की संख्या
- छात्र-छात्राओं के बीच सकारात्मक संवाद।

## आपकी प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है

आप दिए गए सभी उत्तरों को जितने सकारात्मक ढंग से स्वीकार करते हैं, छात्र-छात्रा भी उतना ही ज्यादा सोचना और कोशिश करना जारी रखेंगे। यह सुनिश्चित करने के कई तरीके हैं कि गलत उत्तरों और गलत धारणाओं को सुधार दिया जाए, और यदि एक छात्र के मन में कोई गलत अवधारणा है, तो आप निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि कई अन्य छात्र-छात्राओं के मन में भी वही गलत अवधारणा होगी। आप निम्नलिखित का प्रयास कर सकते हैं:

- उत्तरों के उन हिस्सों को चुन सकते हैं, जो सही हैं और एक सहायक ढंग से छात्र-छात्राओं से अपने उत्तर के बारे में थोड़ा और सोचने के लिए कह सकते हैं। यह ज्यादा सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और आपके छात्र-छात्राओं की अपनी गलतियों से सीखने में मदद करता है। निम्नलिखित टिप्पणी यह दर्शाती है कि आप ज्यादा मददगार ढंग से किस प्रकार से गलत उत्तर पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं:  
‘आप वाष्पीकरण से बनते बादलों के बारे में सही थे लेकिन मुझे लगता है कि हमें बारिश के बारे में आपने जो कहा है उसके बारे में थोड़ा और पता लगाने की जरूरत है। क्या आपमें से कोई और इस बारे में कुछ बता सकता है?’
- छात्र-छात्राओं से मिलने वाले सभी उत्तर ब्लैकबोर्ड पर लिखें, और छात्र-छात्राओं से पूछें कि वे इनके बारे में क्या सोचते हैं। उनके अनुसार कौन-से उत्तर सही हैं? कोई अन्य उत्तर देने का कारण क्या रहा होगा? इससे आपको यह समझने का एक मौका मिलता है कि आपके छात्र-छात्रा किस तरीके से सोच रहे हैं और आपके छात्र-छात्राओं को भी एक मित्रवत तरीके से अपनी गलत धारणाओं को सुधारने का अवसर मिलता है।

सभी उत्तरों को ध्यान से सुनकर और आगे समझाने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रेरित करके उन्हें महत्व दें। उत्तर चाहे सही हो या गलत, लेकिन यदि आप छात्र-छात्राओं से अपने उत्तरों को विस्तार में समझाने को कहते हैं, तो अक्सर छात्र अपनी गलतियाँ खुद ही सुधार लेंगे, आप एक चिंतनशील कक्षा का विकास करेंगे और आपको वास्तव में पता चलेगा कि आपके छात्र कितना सीख गए हैं और अब किस तरह आगे बढ़ना चाहिए। यदि गलत उत्तर देने पर अपमान या सज़ा मिलती है, तो दोबारा शर्मिंदगी या डांट के डर से आपके छात्र कोशिश करना ही छोड़ देंगे।

## उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना

यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रश्नों का एक ऐसा क्रम अपनाने की कोशिश करें, जो सही उत्तर पर खत्म न होता हो। सही उत्तरों के बदले फॉलो-अप प्रश्न पूछने चाहिए, जो छात्र-छात्राओं का ज्ञान बढ़ता है और उन्हें शिक्षक के साथ जुड़ने का मौका देते हैं। इसे आप इन चीजों को पूछकर कर सकते हैं:

- एक *कैसे* या एक *क्यों*
- उत्तर देने का एक और तरीका
- एक बेहतर शब्द
- किसी उत्तर को सही साबित करने के लिए प्रमाण
- संबंधित कौशल का एकीकरण
- उसी कौशल या तर्क का किसी नई स्थिति में अनुप्रयोग।

ज्यादा गहराई में जाकर सोचने में छात्र-छात्राओं की मदद करना और उनके उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना आपकी भूमिका का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। अधिक उपलब्धि हासिल करने में निम्नलिखित कौशल छात्र-छात्राओं की मदद करते हैं:

- **प्रोत्साहन** के लिए छात्र-छात्राओं को उचित संकेत देने की ज़रूरत पड़ती है - ऐसे संकेत जिनसे छात्र-छात्राओं को उनके प्रश्नों को विकसित करने और सुधार में मदद मिलती हो। उत्तर में सही क्या है, आप पहले इसे चुनकर इसके बाद जानकारी, आगे के प्रश्न तथा अन्य संकेत दे सकते हैं। ('अगर आप कागज के अपने हवाई जहाज के आखिर में वजन रखते हैं तो क्या होगा?')
- **जांच-पड़ताल** अधिक जानकारी पाने की कोशिश करने, एक अव्यवस्थित उत्तर को या आंशिक रूप से सही उत्तर को सुधारने की कोशिश में छात्र जो कहना चाहते हैं, उसे स्पष्ट करने में उनकी मदद करने से संबंधित है। ('इस सबका जो अर्थ है उसके बारे में आप मुझे और क्या बता सकते हैं?')
- **फिर से ध्यान केंद्रित करना** सही उत्तरों के आधार पर छात्र-छात्राओं के ज्ञान को उस ज्ञान से जोड़ने से संबंधित होता है, जो उन्होंने पहले सीखा है। यह उनकी समझदारी को विकसित करता है। ('आपकी बात सही है, लेकिन पिछले सप्ताह हमने अपने स्थानीय पर्यावरण विषय के बारे में जो सिखाया, यह उससे किस प्रकार संबंधित है?')
- **प्रश्नों को क्रमबद्ध तरीके से रखने** का अर्थ है ऐसे क्रम में प्रश्न पूछना, जिन्हें सोच का विस्तार करने हेतु बनाया गया है। प्रश्नों के द्वारा छात्र-छात्राओं को सारांश बनाने, तुलना करने, व्याख्या करने और विश्लेषण करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। ऐसे प्रश्न तैयार करें, जिनसे छात्र-छात्राओं को सोचने की प्रेरणा मिले, लेकिन उन्हें इतनी ज्यादा भी चुनौती न दें कि प्रश्न का अर्थ ही खो जाए। ('स्पष्ट करें कि आप अपनी पहले की समस्या से किस प्रकार उबरे। उससे क्या फर्क पड़ा? आपको क्या लगता है आगे आपको किस चीज का सामना करने की ज़रूरत पड़ेगी?')

- सुनने से आप न केवल अपेक्षित उत्तर पर गौर करने में समर्थ होते हैं, बल्कि इससे आप असाधारण या नवोन्मेषी उत्तरों के प्रति सतर्क भी होते हैं, जिसकी हो सकता है कि आपको अपेक्षा न रही हो। इससे यह भी दिखाई देता है कि आप छात्र-छात्राओं के विचारों को महत्व देते हैं और इसलिए इस बात की ज्यादा संभावना होती है कि वे सुविचारित उत्तर देंगे। इस तरह के उत्तर भ्रांतियों को चिह्नित कर सकते हैं, जिन्हें ठीक करने की जरूरत होती है अथवा वे एक नयी सोच विकसित कर सकते हैं, जिन पर आपने विचार नहीं किया हो। ('मैंने इसके बारे में सोचा नहीं था। आप इस तरह से क्यों सोचते हैं इसके बारे में मुझे और जानकारी दें।')

एक शिक्षक के रूप में, आपको ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो प्रेरित करने वाले और चुनौतीपूर्ण हों, ताकि आप अपने छात्र-छात्राओं से रोचक और अण्वेषणकारी उत्तर पा सकें। आपको उन्हें सोचने का समय देना चाहिए और आप सचमुच यह देखकर चकित रह जाएंगे कि आपके छात्र कितना कुछ जानते हैं और आप सीखने में उनकी प्रगति में कितनी अच्छी तरह मदद कर सकते हैं।

याद रखें कि प्रश्न यह जानने के लिए नहीं पूछे जाते कि शिक्षक क्या जानते हैं, बल्कि वे यह जानने के लिए पूछे जाते हैं कि छात्र क्या जानते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आपको कभी भी अपने खुद के प्रश्नों का जवाब नहीं देना चाहिए! आखिरकार यदि छात्र-छात्राओं को यह पता ही हो कि वे आगे कुछ सेकंड तक चुप रहते हैं, तो आप खुद ही उत्तर दे देंगे, तो फिर उन्हें उत्तर देने का प्रोत्साहन कैसे मिलेगा?

## अतिरिक्त संसाधन

- Teachers of India classroom resources: <http://www.teachersofindia.org/en>

## संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Amritavalli, R. (2007) *English in Deprived Circumstances: Maximising Learner Autonomy*. Department of Linguistics, The English and Foreign Languages University, University Publishing Online: Foundation Books.

Cummins, J. (undated) 'BICS and CALP' (online), Jim Cummins' Second Language Learning and Literacy Development Web. Available from: <http://iteachilearn.org/cummins/bicscalp.html> (accessed 2 July 2014).

Cummins, J. (2000) *Language, Power, and Pedagogy: Bilingual Children in the Crossfire*. Bristol: Multilingual Matters.

Gibbons, P. (2002) *Scaffolding Language, Scaffolding Learning: Teaching Second Language Learners in the Mainstream Classroom*. Portsmouth: Heinemann.

Hastings, S. (2003) 'Questioning', TES Newspaper, 4 July. Available from: <http://www.tes.co.uk/article.aspx?storycode=381755> (accessed 22 September 2014).

Hattie, J. (2012) *Visible Learning for Teachers: Maximising the Impact on Learning*. Abingdon: Routledge.



Krashen, S. (1981) *Second Language Acquisition and Second Language Learning*. Oxford: Pergamon Press.

Krashen, S. (1982) *Principles and Practice in Second Language Acquisition*. Oxford: Pergamon Press.

Mohan, B. (1986) *Language and Content*. Reading, MA: Addison-Wesley.

Mohan, B., Leung, C. and Davison, C. (eds) (2001) *English as a Second Language in the Mainstream: Teaching, Learning and Identity*. New York, NY: Longman.

Wells, G. (2003) 'Children talk their way into literacy', published as 'Los niños se alfabetizan hablando' in García, J.R. (ed.) *Enseñar a escribir sin prisas ... pero con sentido*. Sevilla, Spain: Publicaciones MCEP. Available from: [http://people.ucsc.edu/~gwells/Files/Papers\\_Folder/Talk-Literacy.pdf](http://people.ucsc.edu/~gwells/Files/Papers_Folder/Talk-Literacy.pdf) (accessed 8 July 2014).

Wells, G. (2009) *The Meaning Makers: Learning to Talk and Talking to Learn*, 2nd edn. Bristol: Multilingual Matters.

## अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (<http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।